Dr. Vinod Baitha
Deptt of Economics
Marwari college.
Darbhanga

मांग की लोच का अर्थ एवं मांग की लोच के प्रकार

Meaning of Elasticity of Demand and Kinds of Elasticity of Demand.

किसी वस्तु की कीमत कम होने पर उसकी मांग अधिक होती है जबकि मूल्य में वृद्धि होने पर वस्तु की मांग घट जाती है इसकी जानकारी के लिए हमें मांग की लोच की सहायता लेनी पड़ती है मांग की लोच यह बताती है, किसी वस्तु के मूल्य में कमी या वृद्धि किस गति या दर से होती है, और कितनी वृद्धि या कमी मांग की लोच संबंधित होता है। लेकिन मांग का नियम यह बताता है कि किसी वस्तु की कीमत कम होने पर उसकी मांग अधिक होती है जबकि मूल्य में वृद्धि होने पर वस्तु की मांग घट जाती है। लेकिन मांग की लोच स्पष्ट करती है कि मूल्य में परिवर्तन के फलस्वरूप वस्तु की मांग किस गति या दर से परिवर्तित होती है।

मांग की लोच की परिभाषा विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा अलग-अलग ढंग से दी गयी है उनमें से कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं।

प्रो० मार्शल के अनुसार "किसी बाजार में वस्तु की मांग की लोच कम या अधिक तब होती है जब मूल्य में एक निश्चित कमी से मांग की मात्रा में अधिक या कम वृद्धि होती है। तथा मूल्य में एक निश्चित वृद्धि होने से मांग की मात्रा में अधिक या कम कमी होती है।"

प्रो० बोल्डिंग Bolding के शब्दों में "किसी वस्तु के मूल्य में एक प्रतिशत परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी मांग की मात्रा में जो प्रतिशत परिवर्तन होता है उसे मांग की लोच कहते हैं।"

श्रीमती जोन रॉबिन्सन Mrs Joan Robinson ने और भी स्पष्ट परिभाषा दी है, उनके अनुसार "मांग की लोच कीमत में थोड़े से परिवर्तन के परिणाम स्वरूप खरीदी गई मात्रा के अनुपातिक परिवर्तन को कीमत के अनुपातिक परिवर्तन से भाग देने पर प्राप्त होती है।"

श्रीमती जोन रॉबिंसन के अनुसार – मांग की कीमत लोच =

$$\text{मांग की कीमत लोच} = e_p = \frac{\text{मांग में अनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत में अनुपातिक परिवर्तन}}$$

यहाँ e_p मांग की कीमत लोच को बताता है स्टोनियर तथा हेग ने कहा है कि "वस्तु
× मांग की लोच एक तकनीकी शब्द है जिसका प्रयोग अर्थशास्त्रियों द्वारा मूल्य में कमी के फलस्वरूप मांग में परिवर्तन की मात्रा का वर्णन करते हुए किया जाता है।

Scanned by CamScanner

मांग की लोच की कई प्रकार होती है। मूल्य में परिवर्तन से वस्तुओं की मांग में अलग-अलग परिवर्तन होता है मांग की लोच को पाँच श्रेणियों में विभाजित किया जाता है।

1. पूर्णतया लोचदार मांग – Perfectly Elastic demand. – पूर्णतया लोचदार मांग जब मूल्य में हुए सूक्ष्म परिवर्तन से भी मांग में अनन्त वृद्धि हो जाय या मूल्य में अल्प वृद्धि होने पर भी मांग घटकर शून्य हो जाए तो इसे पूर्णतः लोचदार मांग की संज्ञा दी जाती है।

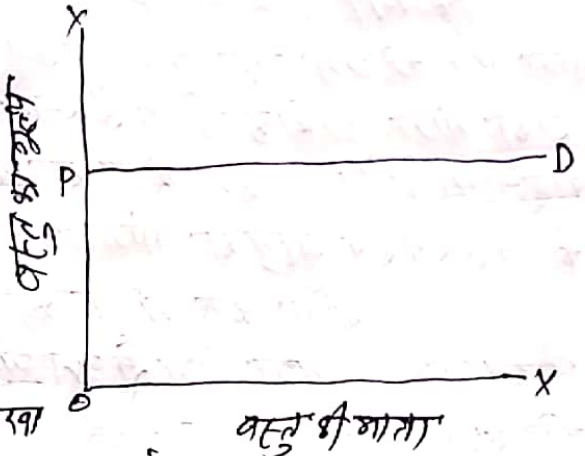

चित्र में OX अक्ष पर वस्तु की मात्रा OY अक्ष पर वस्तु का मूल्य दिखाया गया है। P.D पूर्णतः लोचदार मांग की रेखा है मांग की रेखा है मांग की रेखा OX अक्ष के समानांतर है जिसका अर्थ यह कि मूल्य OP में अल्प कमी भी हो तो मांग बढ़कर अनंत हो जाएगी। या मूल्य में थोड़ी वृद्धि होने पर मांग घटकर शून्य हो जाएगी। लेकिन वास्तविक जीवन में पूर्णतः लोचदार मांग की स्थिति नहीं देखने को मिलती है।

2. सापेक्षिक या अधिक लोचदार मांग:— जब मूल्य में परिवर्तन की अपेक्षा मांग में परिवर्तन की दर अधिक हो तब इसे सापेक्षिक लोचदार मांग या मांग की लोच इकाई से अधिक कहा जाता है।

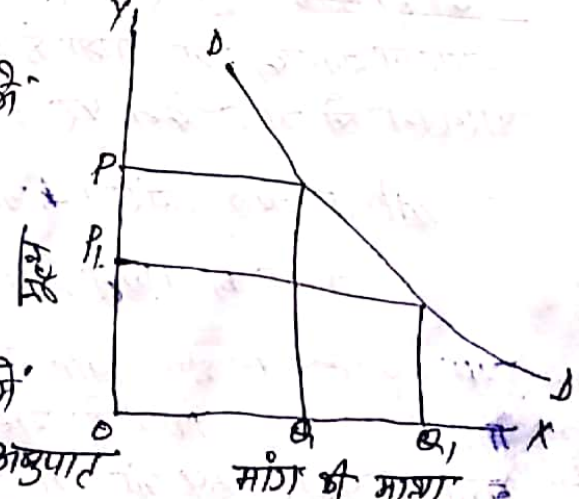

चित्र से स्पष्ट है कि मूल्य में कमी आती है अर्थात वह OP से OP1 पर चली आती है। तो मांग बढ़कर OQ से OQ1 हो जाती है यहाँ मांग में वृद्धि की दर मूल्य में कमी के अनुपात से अधिक है। यहाँ मांग की लोच इकाई से अधिक है ep > 1 है।

Scanned by CamScanner

3. सापेक्षिक बेलोचदार मांग — जिस अनुपात में मूल्य में कमी हो रही है उसकी तुलना में मांग में वृद्धि की दर कम हो तो उसे सापेक्षिक बेलोचदार की मांग कहा जाता है।

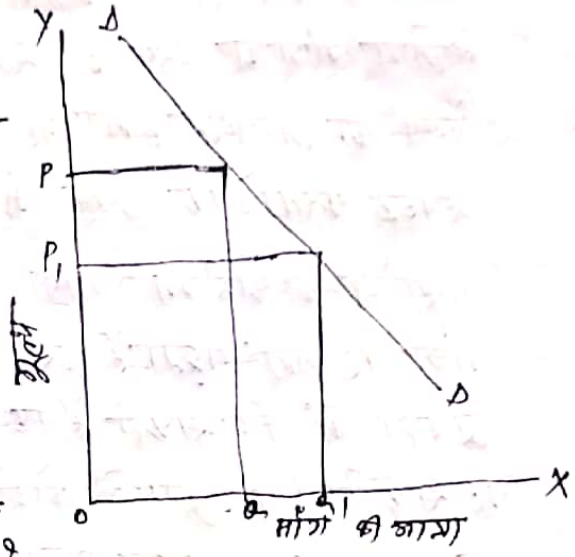

चित्र से स्पष्ट है कि मूल्य में कमी OP से OP1 के बराबर होती है जबकि मांग OQ से बढ़कर OQ1 होती है जो मूल्य में कमी की अपेक्षा बहुत कम है दूसरे शब्दों में PP1 की दूरी की अपेक्षा QQ1 की दूरी कम है यह मांग के सापेक्षिक लोचदार होने का द्योतक है। यहाँ मांग की लोच इकाई से कम है। ($e_p < 1$)

4. समलोचदार या इकाई के बराबर मांग की लोच — जिस अनुपात या दर से मूल्य में परिवर्तन होता है यदि उसी अनुपात में मांग में भी परिवर्तन हो तो उसे समलोचदार मांग या लोच इकाई के बराबर कहते हैं इसे देखा चित्र में निम्न प्रकार से दर्शाया जा सकता है।

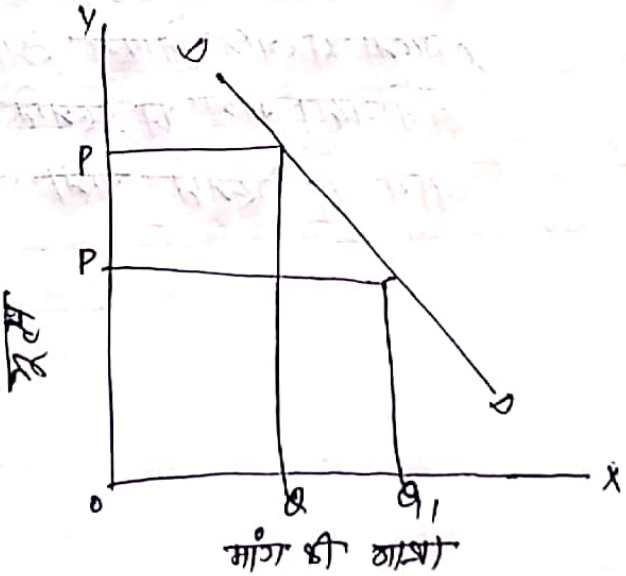

चित्र से स्पष्ट है कि जिस अनुपात में मूल्य में कमी आई ठीक उसी अनुपात में मांग में वृद्धि हुई। इस प्रकार मांग की लोच इकाई के बराबर ($e_p = 1$) है।

5. पूर्णतः बेलोचदार मांग — पूर्णतः बेलोचदार मांग तब कही जाती है जब मूल्य में परिवर्तन का कोई प्रभाव मांग पर नहीं होता है लेकिन व्यवहार में इस तरह की मांग की

Scanned by CamScanner

लोच नहीं पायी जाती है। इस तरह की मांग की लोच को रेखा चित्र द्वारा भी दिखाया गया है जो निम्न है।

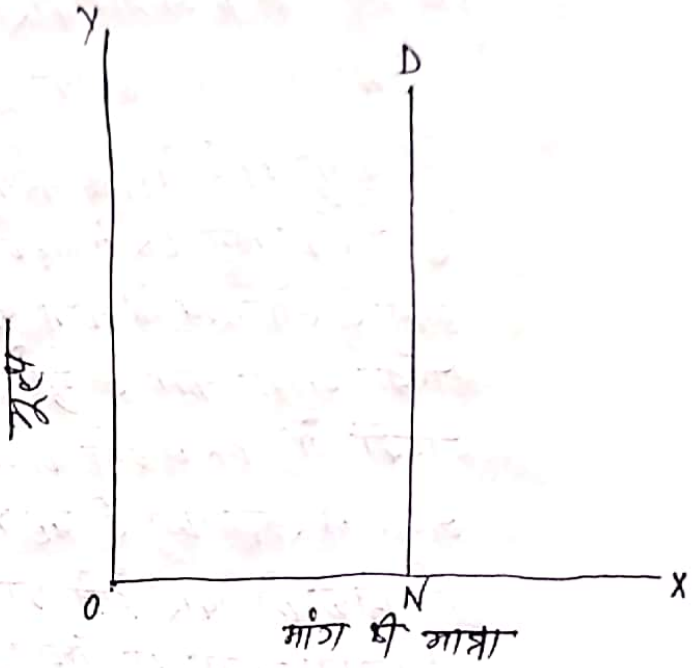

चित्र में DN पूर्णतया बेलोच बेलोच मांग की रेखा है। इस रेखा का लम्बवत होना यह स्पष्ट करता है कि मूल्य में परिवर्तन का कोई भी प्रभाव मांग पर नहीं पड़ता है दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि कह सकते हैं कि मूल्य में कोई भी परिवर्तन का असर मांग पर नहीं पड़ता है। मांग की लोच शून्य (e=0) है।

इस प्रकार मांग की लोच से हमें ज्ञात होता है कि किसी वस्तु के मूल्य में परिवर्तन के फलस्वरूप उसके मांग में किस गति या किस दर से कितना परिवर्तन होता है साथ ही मांग की लोच के प्रकार से यह ज्ञात होता है कि मूल्य के अधिक या कम होने पर मांग कितना अधिक या कम होता है और उसकी किस प्रकार से व्याख्या की जाय लेकिन व्यवहारिक जीवन में पूर्णतः लोचदार या पूर्णतः बेलोचदार मांग की स्थिति नहीं पायी जाती है बल्कि इन दोनों के बीच की स्थिति पायी जाती है।

Scanned by CamScanner